अध्याय द्वितीय
संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना –

शोधकर्ता ने प्रथम अध्याय में शोध परिचय का विवरण किया गया है, जिसमें शोध अध्ययन के बारे में बताया गया है। बच्चों के लिए संविधान एवं शिक्षा नीति में प्रावधान तथा देश में आर्थिक सामाजिक रूप से वंचित एवं पिछडे लोगों की कैसी स्थिति है, उसका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। तथा सर्व शिक्षा अभियान की विवधि योजनाओं का संक्षिप्त परिचय, मध्याह्न भोजन योजना कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन का उद्देश्य अध्ययन की आवश्यकता के बारे में प्रथम अध्ययन में बताया गया है।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत द्वितीय अध्याय में शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन में शोध सबंधित साहित्य का महत्व, लाभ तथा शोध संबंधित साहित्य के आंकलन का विवरण किया गया है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :–

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित पुस्तकें, ज्ञानकोष, पत्र–पत्रिकाऐं तथा प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों इत्यादी से। जिनसे शोध के दौरान अनुसंधानकर्ता को अपनी शोध समस्या का चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना एवं कार्य आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येंक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में, चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम को समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणवत्ता स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारके है।

2.3 संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व :-

वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य एक प्रकार से रूकावट के समान होता है। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न ही कर सकता है।

2.4 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्यः-

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य मुख्य रूप से निम्नलिखित हैः-

- यह अनुसंधान के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करना।
- इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? क्या, कब, किसके और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसकी जानकारी देता है।
- संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि प्रयोग में लाये जाने योग्य उपकरण तथा आंकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- इसका महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाने समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

2.5 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण में लाभ :-

साहित्य के सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्ता को निम्नलिखित लाभ होता हैः-

- अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
- पद समस्या के चुनाव, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।

- अनुसंधान कर्ता के समय की बचत करता है।
- इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
- यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।

2.6 पूर्व शोधकार्य का आंकलन :-

प्रस्तुत अध्याय में सर्व शिक्षा अभियान की मध्याह्न भोजन योजना से सम्बन्धित पूर्व में किये गये शोध कार्यो को सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन के रूप में लिया गया है जो निम्न प्रकार है।

(1) विजय टाण्डे (2006-07)

"शिक्षा के लोक व्यापीकरण हेतु संचालित मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की उपादेयता का प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में दर्ज संख्या, उपस्थिति एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

निष्कर्ष :-

1. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के कारण प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की दर्ज संख्या में वृद्धि हुई है।
2. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की उपादेयता का प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों के प्रतिधारण में कमी हुई है। चूंकि सर्व शिक्षा अभियान का लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों द्वारा निर्धारित प्रतिधारण अनुपात 95 प्रतिशत है। शोध वर्ष 2006-07 के कक्षा 5वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या एवं 4 वर्ष की पूर्व 2002-03 पहली कक्षा उन्हीं विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिधारण अनुपात 61.66 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। जो कि मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की असफलता को प्रदर्शित करता है, लेकिन प्रश्नावली के प्रश्न क्रमांक 09 का उत्तर प्रधान पाठकों, शिक्षकों के द्वारा 100 प्रतिशत है में प्राप्त होने के कारण मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की सफलता को प्रदर्शित करता है।

3. ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में लैगिंक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के आधार पर प्रभाव नहीं है।

(2) प्रीति श्रीवास्तव :- (2006-07)

'मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रबंधन का शाला त्याग एवं शाला के परीक्षाफल पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'

निष्कर्ष :-

1. शाला प्रवेश पर मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रबंधन की गुणवत्ता का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. उच्च प्रबंधन की शालाओं में छात्रों का प्रवेश, निम्न प्रबंधन की शालाओं की तुलना में अधिक होता है।
3. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रबन्धन की गुणवत्ता का शाला के परीक्षा परिणाम पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
4. पाठशाला की स्थिति, पाठशाला की स्वच्छता, बर्तन की सफाई, खाद्यान्न भंडारण प्रदत्त मीनू का परिपालन भोजन की गुणवत्ता एवं खाद्यान्न की सफाई एवं संचालन अभिकरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(3) मेवालाल खरे (2005-06) :-

''प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत् गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी ग्रामीण छात्र/छात्राओं के उपस्थिति, नामांकन, शैक्षिक उपलब्धि एवं शाला त्याग पर सर्वशिक्षा अभियान के कार्यक्रमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।''

निष्कर्ष :-

1. सर्व शिक्षा अभियान के पूर्व गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं के नामांकन (शाला प्रवेशी) छात्रों की संख्या एवं सर्व शिक्षा अभियान के पश्चात् शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के गरीबी रेखा के नीचे आने वाले छात्र-छात्राओं के नामांकन (शाला प्रवेश) में सुधार हुआ है लेकिन अपेक्षित सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
2. सर्व शिक्षा अभियान के पूर्व गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं की शाला में औसत उपस्थिति एवं सर्व शिक्षा अभियान के कियान्वयन के पश्चात् शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के गरीबी रेखा के नीचे आने वाले छात्र-छात्राओं की शाला में औसत उपस्थिति बढ़ी है लेकिन सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
3. सर्व शिक्षा अभियान के पूर्व ग्रामीण छात्रा/छात्राओं के शाला त्यागी (लगातार अनुस्थित रहने वाले) छात्रों की संख्या एवं सर्व शिक्षा अभियान के पश्चात् शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के गरीबी रेखा के नीचे आने वाले छात्र-छात्राओं के शाला त्याग में सार्थक अंतर पाया गया।
4. गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी क्षेत्र के छात्र/छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं पर सर्व शिक्षा अभियान के कार्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पड रहा है।

उपरोक्त, तीनों शोधकर्ता में अपने शोधकार्य में नामांकन, उपस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि के बारे में निष्कर्ष निकाला है। लेकिन प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछडे हुए बालकों उपस्थित एवं पोषणयुक्त अहार मिलने के बारे में यानि की मध्याह्न भोजन योजना के विविध उद्देश्यों की उपलब्धि को देखने के लिए शोधकर्ता अध्ययन कर रहा है।